लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

समीर ताँती की कविताएँ

मूल: असमीया
अनुवाद: रूबी मणि दास

मूल: 1
कोनेओ बिश्वास नकरे ये

कोनेओ बिश्वास नकरे ये
माटित एटा विश्वास आछे। खेतियकर आशा आछे

धुमुहाइ गार चोला उरुवाइ निलेओ कलिजा आछे

शब्दर भितरत शब्द आछे। फलत बीज आछे

कोनेओ विश्वास नकरे ये

यौवनर भीतरते जुइ आछे। रूपांतरर निचा आछे

प्रतिहत करिबलै बाहुत बल आछे। चकुत सपोन आछे
प्राणत उत्ताप आछे आरु आछे अगाध भालपोवा

यॉलैके जाओँ मानुहर अंतरत आछे मानुह

आकाशत बिजुली आछे बृष्टि आछे

हातत हात आछे। हृदयर भाषा आछे। नदीत पानी आछे
भितरलै बाट एटा आछे। पोहरर बाट।
कोनेओ विश्वास नकरे ये
नारीयेइ सेइ अंतहीन अन्वेषणर उत्स।

अनुवाद: 1
कोई भी विश्वास नहीं करता

कोई भी विश्वास नहीं करता कि

मिट्टी में भी एक विश्वास होता है। कृषक की आशा होती है।

शरीर की कमीज तूफान को उड़ा ले जाने पर भी कलेजा होता है।

शब्द के भीतर भी शब्द होते हैं, फलों में बीज होते हैं।

कोई भी विश्वास नहीं करता कि
यौवन के अंदर आग रहती है, रूपांतरण की नशा होती है।

प्रतिहत करने के लिए भुजाओं में बल होता है,
आँखों में सपने होते हैं।

प्राणों में उत्ताप होता है और है अगाध प्रेम।

जहाँ भी जाऊँ मानव के हृदय में मानव पाता हूँ
आकाश में बिजली होती है और वृष्टि भी होती है

हाथों में हाथ होता है, ह्रदय की भाषा होती है,
नदी में पानी होता है

अंदर तक एक रास्ता है, रोशनी का रास्ता

कोई भी विश्वास नहीं करता कि

नारी ही उस अंतहीन अन्वेषण का स्त्रोत है।

मूल : 2
तुमि तेओँक कै दिबा

तुमि तेओँक कै दिबा

सेइ दिनटोर बाबे मइ दु:खित

तुमितो अंतत: जाना

याब खुजिओ मइ किय याब नोवारिलो

करिब खुजिओ मइ किय करिब नोवारिलो

एइ कथा तुमिओ जाना

किय मइ 'मइ' हब खुजिओ हॉब परा नाइ एतियाओ

सेइ दिनटोतो केवल तेओँरे नाछिल

तोमारो नाछिल मोरो नाछिल

सिये दुखर बताहे रेपि निया एटा दुर्भगीया दिन

तुमितो बुजिछाइ मोर उभति अहार आरु कोनो बाट नाइ

एटा तेजे तुमरलि, आनटो चकुलोरे तिता

तातेइ ओर नपरा भोकर बाहर

तातेइ केओफालर पराइ चकु

तुमि तेओक कै दिबा

सेइ दिनटोर बाबे मइ सँचाकैये दु:खित।

अनुवाद : 2
तुम उससे कह देना

तुम उससे कह देना

उस दिन के लिए मैं दुखी हूँ।

तुम तो जानती ही हो

चाह कर भी मैं क्यों नहीं जा पाया

करने की इच्छा होने पर भी मैं कुछ भी क्यों नहीं कर पाया

इस बात को तुम भी जानती हो

चाह कर भी मैं क्यों 'मैं' नहीं बन पाया अब तक

वह दिन तो केवल उसका ही नहीं था

न तुम्हारा था और न मेरा

दुख की हवा से झकझोर वह एक अभागा दिन था

तुम तो समझ चुकी हो कि मेरे लौटने का अब और कोई रास्ता नहीं है

एक खून से लथपथ, दूसरा आँसू से भीगा हुआ है

कभी न खत्म होनेवाली भूख

उस पर भी चारों ओर से नजर है

तुम उससे कह देना

उस दिन के लिए मैं सचमुच दुखी हूँ ।

मूल : 3
दापोणर मुखामुखि तुमि

दापोणर मुखामुखि तुमि

तोमार मुखामुखि इच्छा

तुमि लालन करिछा ताक

तोमार भितरते

एटा सुवदी सुरर दरे

तार गोपन बिस्तार

पृथिवीक तन्मय करि राखे

माजे - समये सि

दुर्बार है उठे

भाङिब खोजे समय

नामबिहीन एटा क्षुधा

एटा शेष हॉब नोखोजा तृषा

कोनो एक निजम परत सि चुइ चाब खोजे

तार चंदन हातेरे

कारोबार नरम ओँठ

मेघर दरे एटि कण्ठ

समर्पित है रै याब खोजे

कोनो एक अजान देशत

तेतिया विनीतभावे तुमि

कि ये एक निर्मल जोनाक

अनुवाद: 3
दर्पण के आमने-सामने तुम

दर्पण के आमने-सामने तुम

तुम्हारे सम्मुख तुम्हारी इच्छा

तुम्हारे भीतर ही

तुमने उसे दुलारा है

एक सुंदर सुर की भाँति

उसका मौन विस्तार

धरती को तन्मय बनाकर रखता है

कभी-कभी वह

दुर्वार हो उठता है

तोड़ना चाहता है समय को

नामविहीन एक क्षुधा

अंतहीन एक तृष्णा

किसी निर्जन क्षण में वह अपने चंदन के हाथों से

छूना चाहता है

किसी के कोमल होंठ

मेघ की तरह एक स्वर

समर्पित होकर रह जाना चाहता है

किसी अजनबी देश में

तभी विनीत भाव से तुम आती हो

क्या निर्मल चांदनी है !

मूल : 4
गोटेइ राति हओक बृष्टि

हे आकाश

गोटेइ राति हओक बृष्टि

गोटेइ राति हओक अवगाहन.....

माटिर दरे मग्न हओक

मोर नाङठ शरीर

मोक पुनर सौँवराइ निदिबा

मोर हेरोवा दिनर यातना

मइ पाहरि थाकिब खोजौँ

सेइ धूसर ठिकना

मोक सपोनर कथा कोवा

कोनेओ नेदेखा सेउजीया सपोनर कथा

मरमियाल एजाक बताहर दरे

मइ आलफुले चुइ चाब खोजौँ

कारोबार कोमल एयुरि चकु

कारोबार जोनाक आवरा मुख

मोक माथौँ फुलर कथा कोवा

काहानिओ नुशुना एक सुरर यादुर कथा

मइ पुनर मिलित हॉव खोजौँ

सेइ निर्जनतार साँते

यॉत लुकाइ आछे कोनेओ नेदेखा नक्षत्रर भाषा

हे आकाश

गोतेइ राति हओँक बृष्टि

गोतेइ राति हओक अवगाहन.....

अनुवाद : 4
पूरी रात हो बरसात

हे आकाश

पूरी रात हो बरसात

पूरी रात हो अवगाहन....

मिट्टी की तरह मग्न हो जाए

मेरा वस्त्रहीन शरीर

मुझे फिर से याद मत दिलाना

मेरे बीते हुए दिनों की यातनाएँ

वह धूसर ठिकाना

भूलकर ही रहना चाहता हूँ...

मुझे सपनों की कथा कहो

हरे सपनों की कथा,जिसे किसी ने नहीं देखा

स्नेहिल हवा के झोंके की तरह

मैं प्यार से छूना चाहता हूँ

किसी की कोमल आँखें

किसी का चाँद जैसा चेहरा

मुझे सिर्फ फूलों की कथा कहो

एक अनसुने सुर के जादू की कथा जो कभी सुनी न गयी हो

मैं फिर से मिलना चाहता हूँ

उस एकांत के साथ

जहाँ छिपी है किसी को भी दिखाई न देनेवाले नक्षत्रों की भाषा

हे आकाश

पूरी रात हो बरसात

पूरी रात हो अवगाहन.....

मूल : 5
मइ एक चाह मजदुर

मइ एक चाह मजदुर

सेउजीयार आंधारत जन्म

मोर बरण कॉला

आंधारर तेज

बेलिक पाठ करौं

बेलिर साज पिंधो

मइ मजुरिर दुखन हात

कोम्पानीर कारेङ साजो

निते नियतिक निचुकाओ

चाउल भजा चाह पानी याचि

पात चिङो कोर मारो

आबेलिर हेङुलीया

मइ कामनार एचपरा मेघ

तियाओँ देह माटिक

पीरिति दिओँ पीरिति लओँ

ईश्वरक भिक्षा मागि

मोर बेदनात जोन नीला

एबाटि मदर दरे उचुपि उठे

मइ एक चाह मजदुर

बागिचात फुलि उठा जुइफुल

अनुवाद: 5
मैं एक चाय मजदूर हूँ

मैं एक चाय मजदूर हूँ

मेरा जन्म हरे के अन्धकार में हुआ है

मेरा रंग काला है

अंधकार का खून है

सूर्य का पाठ करता हूँ

सूर्य का वस्त्र पहनता हूँ

मजदूरी करनेवाले इन दोनों हाथों से मैं

कम्पनी का महल बनाता हूँ।

सदा मैं अपने भाग्य को बहलाता हूँ

तले हुये चावल चाय पानी की याचना से

पत्ते तोड़ता हूँ , कुदाली चलाता हूँ

शाम की लालिमा

मैं कामना का एक टुकड़ा बादल हूँ

भिगोता हूँ देह मिट्टी को

प्रेम देता हूँ प्रेम लेता हूँ
ईश्वर से भीख मांगकर

मेरी वेदना से नीला चाँद
एक कटोरी शराब की तरह सिसकता है

मैं एक चाय मजदूर हूँ
बाग में खिलनेवाला अग्नि पुष्प।

मूल : 6
मइ तोमार मन चुइ योवा

मइ तोमार मन चुइ योवा एक अलिखित दिन

माजे-समये तोमार आलस्य भाङि जागौं एक निपुण उद्यम

निजर करि पोवा मइ एति निजस्व मुहूर्त

तोमार सहज मौनता

सरव करि राखौं तोमाक सपोनर साँते

ह्रदय शुवनि करि मइ येन एक गोलाप उद्यान

तोमारेइ हातर नम्रता

तोमाक बिचारि पाओं तोमाक पुन: हेरुवाइ

मइ तोमार माजेदि परिकल्पित एक सोणर भविष्यत

माजे-समये तोमाक दुखर साँते भाबौं

एक स्वाधीन यौवन।

अनुवाद: 6
मैं तुम्हारे ह्रदय को स्पर्श करनेवाला

मैं तुम्हारे ह्रदय को स्पर्श करनेवाला एक
अनलिखित दिवस हूँ।

कभी-कभी तुम्हारा आलस्य तोड़कर उठता हूँ

एक नए उद्यम के साथ

मैं अपना सा लगनेवाला एक अपना पल हूँ।

तुम्हारी सहज खामोशी को

मैं तुम्हारे सपनों के साथ संभाल कर रखता हूँ।

ह्रदय को सुसज्जित करनेवाला मैं एक गुलाब का

बाग़ हूँ।

तुम्हारी हथेलिओं की कोमलता

तुम्हें पाता हूँ फिर खोकर

मैं तुम्हारे भीतर योजित एक स्वर्णिम उज्वल भविष्य हूँ।

कभी-कभी अपनी व्यथाओं के साथ मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ

एक स्वतंत्र यौवन।

टिप्पणी: हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण प्रयोग में हैं- एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' जैसा होता है। असमीया 'य' के लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है, पर असमीया के 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यांतरण में 'य़' का प्रयोग किया गया है।

संपर्क-सूत्र:

समीर ताँती
7बी आस्था हाइट्स ,बामुनीमैदान
मोबाइल: 9706036658

रूबी मणि दास
ई-मेइल: rubimoni345@gmail.com
मोबाइल: 8638648465